चांद के बारे में वो 10 खास बातें जान लेते हैं, जो अधिकतर लोग नहीं जानते होंगे

कोलंबा कालीधर

1. चंद्रमा का आकार गोल नहीं

पूर्णिमा के दिन आपने चंद्रमा को गोल आकार में देखा होगा. मगर असल में चंद्रमा एक उपग्रह के रूप में किसी गेंद की तरह गोल नहीं है. ये अंडाकार है. इसी वजह से चांद की तरफ देखते हुए आपको इसका कुछ हिस्सा नजर आता है. चांद का भार भी इसके ज्यामितीय केंद्र से 1.2 मील दूर है.

2. पूरा दिखाई नहीं देता चांद

जब भी आप चांद को देखते हैं, तो आपको उसका अधिकतम 59 फीसदी हिस्सा ही दिखता है. इसका 41 फीसदी हिस्सा धरती से नजर नहीं आता. ऐसा कहा जाता है कि अगर आप अंतरिक्ष पर जाकर इसी 41 फीसदी हिस्से पर खड़े हो जाएंगे, तो आपको धरती भी दिखाई नहीं देगी.

3. ब्लू मून शब्द के पीछे की कहानी

कहा जाता है कि चंद्रमा से जुड़ा ब्लू मून शब्द पहली बार साल 1883 में इंडोनेशियाई द्वीप क्राकातोआ में हुए ज्वालामुखी विस्फोट के कारण इस्तेमाल में आया था. ये पृथ्वी के इतिहास के सबसे घातक ज्वालामुखी विस्फोट में गिना जाता है. जब इसमें विस्फोट हुआ था, तो उसकी आवाज पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के कई हिस्सों तक सुनी गई थी. आसमान में राख फैल गई थी. राख इतनी अधिक थी कि चांद नीला नजर आने लगा था.

4. सीक्रेट प्रोजेक्ट पर हो रहा काम

दुनिया में एक वक्त ऐसा भी था, जब अमेरिका चंद्रमा पर परमाणु हथियारों के इस्तेमाल को लेकर विचार कर रहा था. ऐसा करके अमेरिका सोवियत संघ को ये दिखाना चाहता था कि वो कितना शक्तिशाली है. इस सीक्रेट प्रोजेक्ट का नाम % स्ह्लह्लस्र4 श्द्ध Lunar Research Flights' और प्रोजेक्ट %119% रखा गया था.

5. वहां कैसे बन रहे हैं गड्ढे

हाल में ही इसरो ने चांद की कुछ तस्वीरें जारी की हैं. जिसमें लोगों को चांद पर काफी गड्ढे नजर आए. ये गड्ढे यहां करीब चार अरब साल पहले आकाशीय पिंडों की टक्कर की वजह से बने थे. इन गड्ढों को इंपैक्ट क्रेटर भी कहा जाता है.

6. पृथ्वी की रफ्तार कम कर रहा

चांद पृथ्वी की रफ्तार को धीमा कर रहा है. जब वो पृथ्वी के बेहद करीब होता है, तो उसे पेरिग्री कहा जाता है. तब ज्वार-भाटा का स्तर सामान्य से बेहद अधिक हो जाता है. इस दौरान चंद्रमा पृथ्वी की घूमने की ताकत को काम कर देता है. जिसके कारण पृथ्वी प्रत्येक शताब्दी में 1.5 मिलि सेकंड तक धीमी हो रही है.

7. चंद्रमा पर रोशनी का रहस्य

पूर्णिमा का चांद लोगों को रोशनी से भरा हुआ दिखता है. मानो इससे अधिक रोशन कोई और चीज बनी ही न हो. मगर सूर्य पूर्णिमा के इस चांद की तुलना में 14 गुना ज्यादा चमकीला होता है.

8. चंद्रमा न फैल रहा न सिकुड़ रहा

लियानार्डो डा विंसी इतिहास में ऐसे पहले शख्स हैं, जिन्होंने ये पता लगाया था कि चांद सिकुड़ या फैल नहीं रहा है. उसका केवल कुछ हिस्सा ही हमारी निगाहों से ओझल हो जाता है.

9. क्रेटर का नाम कैसे रखते हैं

इंटरनेशनल एस्ट्रॉनॉमिकल यूनियन का काम चंद्रमा के गड्ढों के साथ ही वहां मिलने वाली दूसरी खगोलीय चीजों का नाम रखना है. इन गड्ढों यानी क्रेटर्स के नाम मशहूर वैज्ञानिकों, कलाकारों और एक्सप्लोरर्स के नाम पर रखे जाते हैं.

10. दक्षिणी ध्रुव क्यों है रहस्यमयी

चंद्रयान-3 चांद के जिस दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र पर उतरा है, वो काफी रहस्यमयी माना जाता है. नासा का कहना है कि यहां ऐसे कई गहरे गड्ढे और पहाड़ हैं, जिनकी छांव वाली सतह पर अरबों वर्षों से सूर्य की रोशनी नहीं पड़ी है. चांद का दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र करीब ढाई हजार किलोमीटर चौड़ा है. इसके साथ ही ये आठ किलोमीटर गहरे गड्ढे के किनारे स्थित है. इस गहरे गड्ढे को सौर मंडल यानी सोलर सिस्टम का सबसे पुराना इंपैक्ट क्रेटर भी कहा जाता है.

इंपैक्ट क्रेटर किसी ग्रह या फिर उपग्रह में मौजूद उन गड्ढों को कहा जाता है, जो किसी बड़े उल्का पिंड या फिर ग्रहों की टक्कर से बनते हैं. नासा के अनुसार, चंद्रमा के इस हिस्से में सूर्य क्षितिज के नीचे या हल्का ऊपर रहता है. ऐसे में यहां दिन में थोड़ी बहुत रोशनी पहुंचती है. इस दौरान तापमान 54 डिग्री सेल्सियस तक रहता है।

सुप्रभात दोस्तों।

ऐ स्कूल मुझे बुलाना.....

कमीज के बटन ऊपर नीचे लगाना, वो अपने बाल खुद न काढ़ पाना ,पीटी शूज को चॉक से चमकाना, वो काले जूतों को पैंट से पोछते जाना...

ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर से तो बुलाना ...

वो बड़े नाखूनों को दांतों से चबाना,और लेट आने पे मैदान का चक्कर लगाना वो प्रार्थना के समय कक्षा में ही रुक जाना,पकड़े जाने पे पेट दर्द का बहाना बनाना,

ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर से तो बुलाना

वो टिन के डिब्बे को फुटबाल बनाना, ठोकर मार मार उसे घर तक ले जाना , साथी के बैठने से पहले बेंच सरकाना और उसके गिरने पे जोर से खिलखिलाना

ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर से तो बुलाना ...

गुस्से में एक-दूसरे की कमीज पे स्याही छिड़काना ,वो लीक करते पेन को बालो से पोछते जाना,

बाथरूम में सुतली बम पे अगरबती लगा छुपाना

और उसके फटने पे कितना मासूम बन जाना

ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर बुलाना

वो गेम्ज़ पीरियड के लिए सर को पटाना, यूनिट टेस्ट को टालने के लिए उनसे गिड़गिड़ाना, जाड़ो में बाहर धूप में क्लास लगवाना, और उनसे घर-परिवार की बातें सुनते जाना

ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर से तो बुलाना...

वो बेर वाली के बेर चुपके से चुराना, लाल काला चूरन खा एक दूसरे को जीभ दिखाना जलजीरा, इमली देख जमकर लार टपकाना, साथी से आइसक्रीम खिलाने की मिन्नतें करते जाना, ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर से तो बुलाना ...

वो लंच से पहले ही टिफ़िन चट कर जाना, अचार की खुशबू पूरे क्लास में फैलाना, वो पानी पीने में जमकर देर लगाना, बाथरूम में लिखे शब्दों को बार-बार पढके सुनाना ,ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर से तो बुलाना ...

वो exam से पहले गुरूजी के चक्कर लगाना, बार – बार बस इम्पोर्टेंट पूछते जाना

वो उनका पूरी किताब में निशान लगवाना और हमारा पूरे कोर्स को देख चकराना

ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर से तो बुलाना ..

वो विदाई पार्टी के दिन पेस्ट्री समोसे खाना, और जूनियर लड़के का ब्रेक डांस दिखाना, वो टाइटल मिलने पे हमारा तिलमिलाना ,वो साइंस वाली मैडम पे लट्टू हो जाना, ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर से तो बुलाना ... वो मेरे स्कूल का मुझे यहाँ तक पहुचाना,और मेरा खुद में खो उसको भूल जाना, मेरा बाजार में किसी परिचित से टकराना, वो जवान गुरूजी का बूढ़ा चेहरा सामने आना ...आप सब अपने स्कूल एक बार जरुर जाना .....

-साइबर नजर

कविता/साधारण नारी नहीं

काश मै यहाँ से दूर चली जाती,
महलों की हवा मुझसे टकरा जाती है,
चोट मुझे कहा लगे,पता नहीं
पैर मे छाले पड़े हैं या मखमली चप्पलें, पता नहीं
छाँव अपनों के थे फिर तन्हाइयाँ सयानी कैसे हुई ,
किताबें धूल झाड़कर मेरे पास क्यों आयें,
बड़े तो हम उनके सहारे हूए थे,
फिर घड़ियों की खर्राटे मे खामोशी क्यों सोई रही,
भीड मे हाथ उनके थे फिर मै दूसरों के हाथ क्यों पकड़ी,
लुका छिपी कब तक और क्यों,
क्या मैं चोर हूँ या पुलिस
पता नही ,
सीना तानकर चलना मर्दानगी है,
और मै मर्द नही,
फिर सिर झुकाकर चलना मेरे बस में नहीं,
कौन सी राहें चलूँ मैं,
मेरी सखियाँ तो एक ही राह पकड़ती हैं,
पर मै उसपे चल नही सकती,
मेरे कदम बहुत बड़े हैं
और शायद निशान गहरे भी,
यह रास्ते मुझे बर्दाश्त नही कर सकते,
कई खरी खोटी भी सुना देते हैं,
ये जमाने का ढँढोरा है,
मेरे पायल की अवाज नहीं,
शायद मैं पायल पहन नही सकती ,
चूडियाँ खनका नही सकती ,
फिर मै नारी कैसी,
कई प्रश्नचिह्न अस्तित्व को घेरे है,
फिर ये मोहब्बत की बिंदिया कैसी,
जो रंगीन से सफेद हो गई ,
फिरभी गिरी नही,
शायद मै कोई साधारण नारी नही।

-साइबर नजर

यह है असली खेल भावना
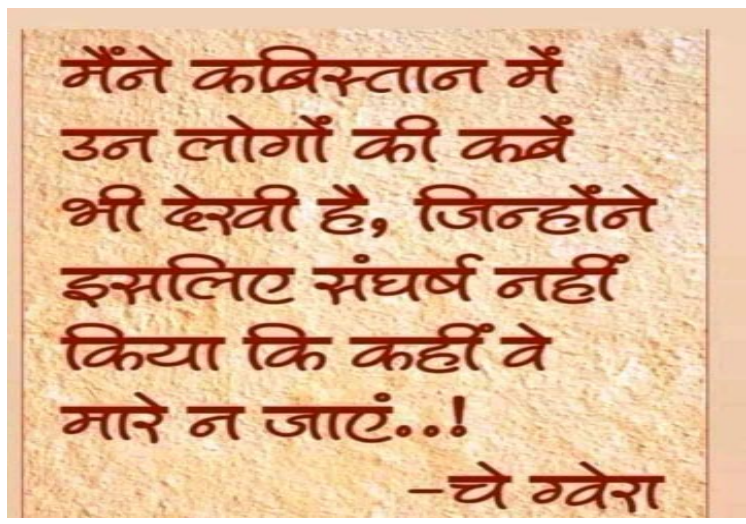
यह है असली खेल भावना जो नफ़रत नहीं प्रेम करना सिखाती है और सत्ता व कट्टरपंथियों की नफ़रती साजिशों पर पानी फेरती रहती है..! भाला फेंक प्रतिस्पर्धा में स्वर्ण जीतने वाले नीरज चोपड़ा पहले भी नफ़रत का जहर घोलने वालों के मुँह पर तमाचा मार चुके हैं और आज रजत जीतने वाले पाकिस्तान के नदीम अरशद को गले लगा बंटवारे और नफरत का जहर घोलने वालों को फिर से एक नसीहत दी कि ये है असली हिंदुस्तानियत..! तुम लड़वाओगे तो हम उसका जवाब प्रेम से देंगे..! बधाई और दिल से सलाम इन दोनों खिलाड़ियों को इस भारतीय उप महाद्वीप की जीत पर..!